Printed Pages – 4

IN-09

B.A. (Part-I) Examination, 2020

SANSKRIT

Paper - II

(गद्य, कथा एवं साहित्येतिहास)

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 75

Minimum Pass Marks : 25

नोट : यह प्रश्नपत्र पाँच इकाइयों में विभक्त है। प्रश्नों की कुल संख्या पाँच है, प्रश्नों के विकल्प उपलब्ध हैं। सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। सभी के अंक प्रश्नों के सामने निर्दिष्ट हैं।

इकाई–I

Q. 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ प्रसंग व्याख्या कीजिए : **7½+7½=15**

(क) गर्भेश्वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरुपत्वममानुष-शक्तित्वञ्चेति महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। सर्वाविनया-नामेकैकमप्येषामायतनम्, किमुत समवायः। यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षाननिर्मलापि कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्झितधवलतापि सरागैव भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं समुद्भूतरजोभ्रान्तिरति-दूरमात्मेच्छया यौवनसमये पुरुषं प्रकृतिः।

(ख) आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशी लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि सुभटखड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मीः क्षीरसागरात्- पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम्, उच्चैःश्रवसश्चञ्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम् मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेरति नैष्ठुर्यम् इत्येतानि सहवासपरिचयवशाद् विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वैवोद्गता।

(ग) तथाहि–सततम् ऊष्माणम् आरोपयन्त्यपि जाड्यमुपजनयति। उन्नतिमादधानापि नीचस्वभावतामाविष्करोति। तोय-राशिसम्भवापि तृष्णां संवर्द्धयति। ईश्वरतां दधाना अपि अशिवप्रकृतित्वम् आतनोति। बलोपचयम् आहरन्त्यपि लघिमानम् आपादयति। अमृतसहोदरापि कटुकविपाका। विग्रहवत्यपि अप्रत्यक्षदर्शना। पुरुषोत्तमरतापि खलजनप्रिया।

(घ) कामं भवान् प्रकृत्यैव धीरः। पित्रा च महता प्रयत्नेन समारोपितसंस्कारः। तरलहृदयमप्रतिबुद्धञ्च मदयन्ति धनानि। तथापि भवद्गुणसन्तोषो मामेवं मुखरीकृतवान्। इदमेव च पुनः पुनरभिधीयसे–विद्व-समपि सचेतनमपि महासत्वमपि अभिजातमपि धीरमपि प्रयत्नवन्तमांपि पुरुषमियं दुर्विनीता खत्रीकरोति लक्ष्मीरीति।

इकाई–II

Q. 2. निम्नलिखित विकल्पों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **7½+7½=15**

(क) इत्याकर्ण्य हिरण्यकः प्रहृष्टमनाः पुलकितः सन्नब्रवीत् – साधु मित्र! साधु। अनेन आश्रितवात्सल्येन त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं त्वपि युज्यते। एवमुक्त्वा तेन सर्वेषां बन्धनानि छिन्नानि। ततो हिरण्यकः सर्वान् सादरं सम्पूज्याह–सखे चित्रग्रीव सर्वथात्र जालबन्धनविधौ दोषम् आशङ्क्य आत्मनि अवज्ञा न कर्तव्या।

(ख) उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपौति लक्ष्मीः
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्रदोषः।।

(ग) अथ लघुपतनकनामा काकः सर्ववृत्तान्तदर्शी साश्चर्य-मिदमाह अहो, हिरण्यक! श्लाध्योऽसि अतः अहमपि त्वया सह मैत्रीमिच्छामि, अतो मां मैत्र्येण अनुग्रहीतुम् अर्हसि। एतत् श्रुत्वा हिरण्यकोऽपि विवराभ्यन्तराद् आह-कस्त्वम् ? स ब्रूते–लघुपतनकनामा वायसोऽहम्। हिरण्यकः विहस्य आह–का त्वया सह मैत्री ?

इकाई–III

Q. 3. (क) शुकनासोपदेश का सार अपने शब्दों में लिखें। **7½**

अथवा

शुकनासोपदेश में वर्णित लक्ष्मी के स्वरूप का वर्णन करें।

(ख) हितोपदेश के तीसरे कथा का सार अपने शब्दों में लिखें। **7½**

अथवा

हितोपदेश में वर्णित नैतिक मूल्यों की चर्चा करें।

इकाई–IV

Q. 4. निम्नलिखित विकल्पों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर लिखें : **5×3=15**

(i) ऋग्वेद का परिचय प्रदान करें।

(ii) ब्राह्मण ग्रन्थों का महत्त्व बताते हुए चारों वेदों के एक-एक ब्राह्मण ग्रन्थ का नाम लिखें।

(iii) आरण्यक ग्रन्थों का परिचय तथा महत्व स्पष्ट करें।

(iv) शिक्षा वेदांग का महत्त्व प्रतिपादित करें।

(v) उपनिषद् के वर्णनीय विषय का प्रतिपादन करें।

इकाई–V

Q. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन कवियों का जीवन परिचय तथा रचना पर प्रकाश डालें। **5×3=15**

(i) महाकवि कालिदास

(ii) भारवि

(iii) माघ

(iv) श्रीहर्ष

(v) बाणभट्ट

(vi) शूद्रक